ई.एच.डी.-1

06614

स्नातक उपाधि कार्यक्रम

सत्रांत परीक्षा

जून, 2011

ऐच्छिक पाठ्यक्रम : हिन्दी

ई.एच.डी.-1 : हिन्दी गद्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। पहला प्रश्न **अनिवार्य** है।*

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से ***किन्हीं तीन*** की प्रसंग-सहित व्याख्या कीजिए। 12x3=36

(क) शहर में न कोई हलचल थी, न मारकाट। एक बूँद भी खून नहीं गिरा था। आज तक किसी स्वाधीन देश के राजा की पराजय इतनी शांति से, इस तरह खून बहे बिना न हुई होगी। यह वह अहिंसा थी, जिसपर देवगण प्रसन्न होते हैं। यह वह कायरपन था, जिसपर बड़े-बड़े कायर भी आँसू बहाते हैं। अवध के विशाल देश का नवाब बंदी चला जाता था और लखनऊ ऐश की नींद में मस्त थी। यह राजनीतिक अधःपतन की चरम सीमा था।

(ख) विमाता का नाम ही बुरा होता है। अपनी माँ विष भी खिलाए तो अमृत है; मैं अमृत भी पिलाऊँ तो विष हो जाएगा। तुम लोगों के कारण मैं मिट्टी में मिल गई, रोते-रोते उम्र कटी जाती है, मालूम ही न हुआ कि भगवान ने किस लिए जन्म दिया था ; और तुम्हारी समझ में मैं विहार कर रही हूँ। तुम्हें सताने में मुझे बड़ा मज़ा आता है। भगवान भी नहीं पूछते कि सारी विपत्ति का अंत हो जाता।

(ग) आत्म-चिंतन में जो ऐश्वर्य है, क्षत्रिय! वह इन तुच्छ भड़कीले वैभवों में नहीं है – वैभव जो अपने साथ मृत्यु लिये हुए है! शत्रु के गुप्तचरों और विषकन्याओं पर विश्वास करने वाला सम्राट एक ही पदक्षेप में मृत्यु का आलिंगन उसी भाँति करता है जैसे एक ही उछाल में पतंगा दीप-शिखा के भीतर जलती हुई मृत्यु में भस्म हो जाता है। तुम भी भस्म हो जाओ और अपने वैभव का जला हुआ काला धुआँ अपने पीछे छोड़ जाओ!

(घ) पराधीनता की एक परंपरा-सी उनकी नस-नस में उनकी चेतना में न जाने किस युग से घुस गई है। उन्हें समझकर भी भूल करनी पड़ती है। क्या यह मेरी भूल न थी- जब मुझे निर्वासित किया गया, तब मैं अपनी आत्म-मर्यादा के लिए कितनी तडप रही थी और राजाधिराज रामगुप्त के चरणों में रक्षा के लिए गिरी, पर कोई उपाय चला? नहीं। पुरुषों की प्रभुता का जाल मुझे अपने निर्दिष्ट पथ पर ले ही आया।

(ङ) यह कोई बात नहीं है कि एक ही स्वभाव और रुचि के लोगों ही में मित्रता हो सकती है। समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। जो गुण हम में नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले जिसमें वह गुण हो। चिंताशील मनुष्य प्रफुल्लचित्त मनुष्य का साथ ढूँढ़ता है, निर्बल बली का, धीर उत्साही का। उच्च आकांक्षा वाला चंद्रगुप्त युक्ति और उपाय के लिए चाणक्य का मुँह ताकता था।

2. भारतेंदु युग के पूर्व खड़ी बोली गद्य के विकास पर प्रकाश डालिए। 16

3. 'परदा' कहानी के संरचना-शिल्प पर विचार कीजिए। 16

4. 'निर्मला' उपन्यास के आधार पर मुंशी तोताराम का चरित्र-चित्रण कीजिए। 16

5. 'जोंक' एकांकी के प्रतिपाद्य का विवेचन करते हुए उसके शीर्षक की उपयुक्तता पर विचार कीजिए। 16

6. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में नारी-जागरण की चेतना को स्पष्ट कीजिए। 16

7. 'बातचीत' निबंध में लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति का विवेचन कीजिए। 16

8. प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी के विकास का विवरण प्रस्तुत कीजिए। 16

9. *किन्हीं दो* पर टिप्पणियाँ लिखिए : 8x2=16

(क) रेखाचित्र और संस्मरण।

(ख) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की अभिनेयता।

(ग) 'आकाशदीप' कहानी की भाषा।

(घ) एकांकी और रेडियो नाटक।

(ङ) निबंधों के प्रमुख भेद।

———